कृति	:	<u>अनहद गूंज–काव्य संग्रह</u>
कृतिकार	:	मुनि प्रज्ञा सागर
प्रकाशक	:	कुन्द–कुन्द संस्कृति न्यास, बागीदौरा–बांसवाड़ाः राज.
प्राप्ति स्थल	:	कुन्द–कुन्द संस्कृति न्यास, बागीदौरा–बांसवाड़ा : राज. तरूण कांति परिषद, सोनकच्छ : म.प्र.
मूल्य	:	5/– रूपये मात्र

पश्चिमी विचारक हार ग्रेव ने लिखा है –तारे आकाश की कविता है और प्रकृति धरती की कविता है तारे और प्रकृति भले ही आकाश और धरती की कविता हो, परन्तु कविता हृदय की आवाज है। हृदय का स्पन्दन है। अनहृद की गूंज है।

कविता में लोगों के दिल और दिमाग को झकझोरने की अन्तःकरण को गुदगुदाने की, सुषुप्त चेतना को चेताने की, जगाने की, भटकी मानव जाति को मार्ग सुझाने की, नैतिकता से पतित होती हुई संतति को खबरदातर करने की, और कल्पना की शक्ति को अभिव्यक्ति देने की अद्‌भुत क्षमता है। कविता साहित्य की वह विद्या है, जो कवि को अमरता प्रदान करने हेतु सुधा का काम करती है।

अभी तो कई लोग कविता के मायने भी नहीं स्मझते हैं। लोगों को यह भी ज्ञात नहीं कि कविता क्या है ? क्योंकि जब मैं लोगों से कविता सुनाने के पूर्व पूंछता हूं कि बताईये कविता क्या है ? तो वे लोग आस–पास मुंह ताकते है और कहते हैं मुनिश्री आप ही बतलाईये। तब मैं उनसे कवि धूमिल, के शब्दों में कहता हूॅ कविता भाषा में आदमी होने की तमी है।

मैंने भी अपने अस्तित्व को पहचाना और मुनित्व की साधना करते हुए चिन्तन को शब्दों का बाना पहना कर कविता का रूप दिया है।

अनहद् गूंज के प्रथम खंड में मैंने आचार्य समन्तभद्र स्वामी द्वारा रचित स्वयं भू–स्त्रोत के भावों को ग्रहण किया है, जिसमें मुझे आचार्य प्रवर दादा गुरू श्री विद्यासागरजी महाराज की कृति समन्तभद की भद्रता का भी पूर्ण सहारा मिला है। मैं

इन पूज्यवाद आचार्य का ऋणी हूँ। द्वितीय खण्ड मेरे चिन्तन मनन व अध्ययन का प्रतिफल है।

मुझे इतनी उंचाईयों पर पहुंचाने का श्रेय पूज्यवाद गुरूदेव आचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी महाराज को है। मेरे निर्माता, मेरे भाग्य विधाता गुरूदेव को नमन–नमन–नमन।।

....

....

कृति : श्रावक प्रतिकमण

कृतिकार : मुनि प्रज्ञासागर जी

प्रकाशक : जैन धर्म संवर्धन, अहमदाबाद गुज

प्राप्ति स्थल : जैन धर्म संवर्धन संस्थान द्वारा प्रोफेसर डॉ. शैलेष भाई ए. शाह 1/1 गोकुल अर्पाटमेंट, सोला हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, अहमदाबाद–380063

मूल्य : 3/– रूपये मात्र

प्रभु महावीर ने सत्य के साधकों के लिए, श्रमण और श्रावकों के लिए तीन ही सूत्र दिये हैं। प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान और कायोत्सर्ग, अतीत के पापों के प्रक्षालन के लिए प्रभु ने प्रतिक्रमण नामक प्रथम सूत्र दिया। दूसरा सूत्र दिया अनागत के पापों से बचने के लिए प्रत्याख्यान का और आत्म निरीक्षण करने के लिए तीसरा सूत्र दिया कायोत्सर्ग यानि सामायिक का। ये तीनों ही सूत्र अपने–अपने स्थान पर महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं और इनमें भी पापों के बोझ को हल्का करने की सर्वश्रेष्ठ भूमिका निभाता है प्रतिक्रमण और यदि होना चाहते हो अपने पापों से मुक्त।

तो आइये, हम वमन करें अपने पापों का। तो आईये, हम विमोचन करें अपने कुकृत्यों का। तो आइये, हम स्वीकार करें अपने पापों को। क्योंकि पापों के वमन का नाम ही प्रतिक्रमण है। कुकृत्यों के विमोचन का नाम ही प्रतिक्रमण है। अपने पापों की स्वीकृति का नाम ही प्रतिक्रमण है और यदि वास्तव में कहा जाये तो स्वयं के प्रति किये जाने वाले आक्रमण का नाम ही प्रतिक्रमण है।

तो चलिये, हम करें स्वयं पर आक्रमण। पर ठहरो, आक्रमण करें, उसके पूर्व अपनी शक्ति के अनुसार आसन लगाकर एकाग्रचित हो, भगवान जिनेन्द्र की मूर्ति की तरह बैठ जाये। तत्पश्चात् अपने दोनों हाथों को जोड़कर भगवान जिनेन्द्र का प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से दर्शन/ स्मरण करके प्रतिक्रमण करने का संकल्प करें और संकल्प करने के साथ ही कर दें स्वयं पर आक्रमण यानि प्रतिक्रमण का शुभारंभ।

मैं मानता हूॅ कि धन्यभागी हैं वे लोग जो अपने जीवन में प्रतिक्रमण का शुभारम्भ करते हैं। अपने दुष्कृत्यों का प्रायश्चित करते हैं तथा सबसे क्षमा मांगते हुए सबको हृदय से क्षमा करते हैं और सच है कि वे ही लोग मृत्यु से बच पाते हैं जो प्रायश्चित प्रतिक्रमण के सागर में डुबकिया लगाते हैं। मैं तो प्रभु से यही प्रार्थना करता हूॅ कि प्रभु आपको वो साहस दे जिससे आप सबको क्षमा कर सकें और सबसे क्षमा मांग सकें, और कर सकें स्वयं पर आक्रमण यानि प्रतिक्रमण।

....

कृति : मेरी किताब

कृतिकार : मुनि प्रज्ञा सागर

प्रकाशक : जैन धर्म संवर्धन संस्थान, अहमदाबाद

प्राप्ति स्थल : जैन धर्म संवर्धन संस्थान द्वारा प्रोफेसर डा. शैलेष भाई. ए. शाह 1/1, गोकुल अपार्टमेंट, सोला हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, अहमदाबाद–380063 फोन : 079–27438207

मूल्य : 60/– रूपये मात्र

मेरी किताब–मेरी भावना का एक प्रज्ञा–दर्पण है। जिसमें भावनाओं के अभिराम–प्रसून प्रतिबिम्बित है। मनुष्य को मनुष्य से ही नहीं, वरन् प्राणिमात्र से जोड़ने के लिए उनके सुख दुःख में सहभागिता करने के लिए, भावनाओं की डोर ही सक्षम होती है। मेरी भावना को फीचर/ताना–बाना, दुनिया के तमाम धर्मों के प्रतिष्ठित किया कि वह अलौकिक स्वर बन जाए।

मेरी भावना पर आधारित यह प्रवचन संग्रह सम्प्रदाय विशेष की पूंजी/निधि न रहकर जन–जन की निधि बन गई। अतः इसे सर्वग्राही बनाने की उद्देश्य से इसका नाम मेरी किताब, युक्ति युक्त लगा।

आइये! ऐसी कृति– मेरी किताब की भाव भूमिका को अपने मानस में अंकित करने का एक अकिंचन प्रयास करें। निश्चित ही यह नैतिक मूल्यों का शिला–लेख साबित होगा। पूज्य मुनिश्री की यह ज्ञान और प्रज्ञा की धरोहर उनके प्रभावी व्यक्तित्व के साथ वन्दनीय/पूज्य बन गयी है।

....

कृति : मिलिए जैनाचार्यों से

भाग – 1,2,3, संयुक्त

कृतिकार : मुनि प्रज्ञा सागर

प्रकाशक : जैन धर्म संवर्धन संस्थान, अहमदाबाद

प्राप्ति स्थल : जैन धर्म संवर्धन संस्थान द्वारा प्रोफेसर डा. शैलेष भाई. ए. शाह 1/1, गोकुल अपार्टमेंट, सोला हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, अहमदाबाद–380063 फोन : 079–27438207

मूल्य : 50/– रूपये मात्र

समय की तूली से लिखा गया मानवीय अमानवीय लोगों का चित्र इतिहास कहलाता है और इतिहास जिये गये अनुभवों का निचोड़ है। इतिहास के पृष्ठों पर अंकित होता है अतीत का हिसाब–किताब। इतिहास से ही हमें ज्ञात होता है कि इस पृथ्वी पर अनेकोनेक संत पुरूष हुए है, जिन्होंने गुमराह मानव जाति को मार्गदर्शन/दिशा दर्शन दिया है। उन्हीं साधु–संतों, तीर्थकर भगवन्तों की मौन–करूणा के सहारे ही आज हम बेरोक–टोंक उबड़ खाबड़ विषमताओं से परिपूर्ण स्थिति में अबाध गति से अहर्निश चह रहे हैं, परन्तु दुर्भाग्य है हमारा कि हमारे पास उन महानतम दिगम्बर जैनाचार्यों का न कोई जीवन वृत है, न कोई जीवन चित्र है।

भगवान महावीर स्वामी के बाद हजारों सन्त–महानीषी जैनाचार्य हुए हैं। जिन्होंने धर्म–राष्ट्र व समाज के उत्थान के लिए अनुकरणीय योगदान दिया है, परन्तु अफसोस इस बात का है कि आज तक हम उनके जीवन चरित्र को पूर्णरूपेण संकलित नहीं कर पाये हैं।

मैंने इन सभी कृतियों के सहयोग से यत्र–तत्र बिखरे हुए जैनाचार्यों के जीवन चरित्र को बटोरने का प्रयास किया है। जिसमें प्रमाणिकता, अविरोधकता का पूरा–पूरा ख्याल रखा गया है। फिर भी मेरे द्वारा लिखित कृति मिलिये जैनाचार्यों से मैं त्रुटि होना स्वाभाविक है।

अपनी इस लघुतम कृति को मैं समस्त दिगम्बर जैनाचार्यों को समर्पित करते हुए उनके श्री चरणों में बारम्बार कोटि–कोटि नमन करता है।

....

कृति	:	<u>आपने कभी ख्याल किया</u>
कृतिकार	:	मुनि प्रज्ञा सागर

प्रकाशक : जैन धर्म संवर्धन संस्थान, अहमदाबाद

प्राप्ति स्थल : श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर भूयंग देव चौराहा, सोला रोड़, अहमदाबाद, श्रावक संघ 14, महादेव नगर सोसायटी, सरदार पटेल सोसायटी के पीछे भरूच–392002

मूल्य : 10/– रूपये मात्र

आपने कभी ख्याल किया नाम कृति, प्रकृति से पूर्व है और इस कृति से पूर्व है। यह कहना कठिन है कि यह कृति पहले या प्राकृतिक। जैसे मुर्गी पहले या अण्डा यह प्रश्न अनुत्तरित है, वैसे ही इस कृति और प्रकृति के बारे में कुछ कहना कठिन है। कठिन क्यों है ? इसलिए कि प्रकृति बड़ी रहस्यपूर्ण है और प्रकृति के रहस्यो का उद्घाटन करना बड़ी टेढी खीर है। परन्तु इसका मतलब यह नहीं कि हम प्रकृति के रहस्यों का उद्घाटन कर ही नहीं सकते। कर सकते हैं, लेकिन सिर्फ वे जो प्रकृति से जुड़कर जीते हैं। मैंने सुना है, एक व्यक्ति का गधा हो गया। बहुत खोजी, लेकिन गधा का पता न चला, कि वह कहां है ? तब हैरान होकर वह व्यक्ति एक स्थान पर बैठ गया। आंखें बन्द कर ली। कुछ देर बाद उसने अपने दोनों हाथ जमीन में टेक दिये और गधे की तरह चलने लगा। चलते–चलते कुछ ही देर में वह वहां पहुंच गया, जहां एक गड्ढे में उसका गधा गिर पड़ा था। जैसे ही उसने गधे को देखा, चौंक गया। चिल्लाया–मिल गया, मिल गया। फिर गधे को बाहर निकालकर घर ले आया। लोगों ने पूछा–भाई ! तुमने गधा खोजा कैसे ? उसने कहा, जब सीधे तरह से खोजते–खोजते गधा न मिला तो मैंने आंख बन्द कर विचार किया मैं गधा हूॅं। जो एक साधारण से गधे को न खोज सका। यह विचार गहराई पा गया फिर मैंने दोनों हाथ जमीन में कब टेक दिये और कब चलने लगा, मुझे जरा भी ज्ञात नहीं। परन्तु इतना जरूर कह सकता हूॅं कि गधे की खोज मैंने गधे के समान बनकर ही की है।

जिसे भी खोजना है, उसकी तरह बनना अनिवार्य है। भगवान महावीर को खोजना है तो भगवान महावीर की तरह बनकर मुनित्व की साधना करना अनिवार्य है। ऐसे ही प्रकृति के रहस्यों को जानना है तो की जानकारी होना दूसरी बात है। जानना स्वयं का अनुभव है और जानकारी उधार है। दूसरों के द्वारा प्रदत्त उपहार है। परन्तु दुर्भाग्य है इस सदी का कि आज का आदमी जानना तो दूर, प्रकृति के रहस्यों की जानकारी करना भी पसन्द नहीं करता है। यह वजह है कि दोनों दिन आदमी का चिन्तन कुण्ठित होता चला जा रहा है। मैं चाहता हूँ कि आदमी चिन्तन को मुखरता दें। ताकि जीवन मुस्कुराहट से भर सके। आपने कभी ख्याल किया यह कृति आदमी के चिन्तन को चेतना दे। आदमी पुनः सोचना प्रारम्भ करें इसी बात को लक्ष्य में रखकर उद्‌घाटित की गई है।

याद रहे, यह कृति मेरे द्वारा नहीं लिखी गई है। मेरे द्वारा तो मात्र प्रकृति पर पड़े रहस्य के पर्दे हटाकर उद्‌घाटित की गई है। मैं उद्‌घाटन करता हूँ। इस कृति में मेरा अपना कुछ नहीं है। सब तुम्हारा है। तुम्हारे लिए है। मेरा स्वभाव तुम्हारे जैसे नहीं कि मित्र के लिए भोजन की थाली परोसों और मित्र का साथ देने के बहाने स्वयं खाने बैठ जाओं। मैंने तुम्हारे समक्ष पुस्तक के रूप में चिन्तन के स्वादिष्ट भोजन की थाली परोसे दी है। अब यह तुम्हारी पात्रता पर निर्भर करता है कि तुम इसमें से कितना ग्रहण करते हो। कितना बचाते हो और कितना पचाते हो। इस कृति के उद्‌घाटन में जिन भी मित्रों का प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से संयोग मिला है। वे सब साधुवाद के पात्र है और जिनकी मौन करूणा के सहारे में इस कृति का उद्‌घाटन कर सका हूँ। ऐसे पूज्य वाद गुरूदेव भगवन् श्री पुष्पदन्तसागर जी महाराज का मैं सदा से कृपा पात्र रहा हूँ। भगवन श्री। सदैव मुझ पर अपनी कृपा बरसाते रहे यह विनय है। भगवन् श्री को नम निवेदित करते हुए समग्र विनम्रता के साथ यह कृति ....

....
....

कृति	:	मेरे आशीष लेते जाओ
कृतिकार	:	मुनि प्रज्ञा सागर
प्रकाशक	:	जैन धर्म संवर्धन संस्थान, अहमदाबाद
प्राप्ति स्थल	:	श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर भूयंग देव चौराहा, सोला रोड़, अहमदाबाद, श्रावक संघ 14, महादेव नगर सोसायटी, सरदार पटेल सोसायटी के पीछे भरूच– 392002
मूल्य	:	15/– रूपये मात्र

–सन्त आशीर्वाद देते हैं।

–देना भारतीय संस्कृति की प्रमुख पहचान है इसलिए तो यहां कहा गया है जो देता है वह देवता है, जोर ख्ता है वह राक्षस। रखो !

–रखना बुरा नहीं है, लेकिन रखने के साथ, देना भी सीखो। जोड़ने के साथ, छोड़ना भी सीखो। अर्जन के साथ, विसर्जन भी सीखो। बटोरने के साथ, बांटना भी सीखो।

–इतना भी मत बांटो कि किराये के मकान में रहना पड़े यानि दुसरों के आश्रित होकर रहना पड़े।

–बांटना सीखना है तो जैन मुनि के कमण्डल से सीखो। कैसे ?

–कमण्डलु में दो मुंह होते हैं। एक से पानी भरा जाता है और दूसरे से पानी बाहर निकाला जाता है। जिससे पानी भरा जाता है वह मुंह बड़ा होता है, जिससे पानी निकाला जाता है वह मुंह टोंटी छोटा होता है। इसी तरह हम अर्जन तो बड़ो मुंह से करें लेकिन विसर्जन भी करते रहें, ताकि धन की शुद्धि होती रहे।

–आचार्य जिनसेन स्वामी ने महापुराण ग्रन्थ में श्रावकों का संविधान बनाते हुए कहा है– श्रावकों को अपनी आय का छटवां भाग परमार्थ हेतु निकालना चाहिए–

–वेद कहता है– हे मनुष्य! तू सौ हाथ वाला होकर धनार्जन कर और हजार हाथ वाला बनकर दान कर। इस प्रकार निज की उन्नति कर, क्योंकि तू जितना देगा, उससे कई गुना होकर लौटेगा।

–तुम देना सीखो क्योंकि जो अंजलि भर लेकर दरिया भर लौटा देता है वह संत होता है।

संत देते है, प्रतिपल देते हैं, देते ही चले जाते हैं।

–आशीर्वाद के अतिरिक्त उनके पास देने के लिए कुछ भी नहीं। आशीर्वाद ही देते हैं। उनका होना ही आशीर्वाद है। आशीर्वाद उनकी रोशनी हें आशीर्वाद उनकी सुगन्ध है और आशीर्वाद ही उनका प्रेम है। संत जब आशीर्वाद दे देते हैं तो वह पूरा होता है, होना भी चाहिए। क्योंकि संत अपने मन से तो कुछ कहते नहीं, परमात्मा जो उनसे कहला देता है, वही वे।

कहते हैं। संत तो बांसुरी की तरह होते हैं। उनमें परमात्मा जो भी स्वर फूंक देता है, वही वे तुम्हें सुना देते हैं.............

––––––..

कृति : <u>भक्तामर के प्रश्न–कृति क्रमांक –3</u>

कृतिकार : मुनि प्रज्ञासागर जी

प्रकाशक : जैन धर्म संवर्धन संस्थान, अहमदाबाद

प्राप्ति स्थल : जैन धर्म संवर्धन संस्थान द्वारा प्रोफेसर डॉ. शैलेष भाई ए. शाह 1/1 गोकुल अर्पाटमेंट, सोला हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, अहमदाबार– 380063

मूल्य : 25/– रूपये मात्र

प्रश्न 1 भक्तामर स्त्रोत का दूसरा नाम क्या है?

उत्तर– भक्तामर स्त्रोत का दूसरा नाम आदिनाथ स्त्रोत है।

प्रश्न 2 भक्तामर स्त्रोत के रचयिता कौन हैं ?

उत्तर–भक्तामर स्त्रोत के रचयिता मानतुंग स्वामी है।

प्रश्न 3 भकतामर स्त्रोत की रचना कौन सी शताब्दी में हुई ?

उत्तर–भक्ता स्त्रोत का रचना 11वीं शताब्दी में हुई।

प्रश्न 4 भक्तामर स्त्रोत की रचना कहां पर हुई ?

उत्तर–भक्तामर स्त्रोत की रचना धारा नगरी की जेल में हुई।

प्रश्न 5 भक्तामार स्त्रोत रचयिता जेल कैसे पहुंचे ?

उत्तर–भक्तामर स्त्रोत के रचियता को धर्म विद्वेष के कारण कवि कालिदास के कहने पर राजा भोज ने उन्हें जेल में पहुंचा दिया था।

प्रश्न 6 भक्तामर स्त्रोत क्यों लिखा गया ?

उत्तर–भक्तामर स्त्रोत कर्म बंधन काटने के लिए लिखा गया है।

प्रश्न 7 भक्तामर स्त्रोत कौन–सी भाषा में लिखा गया है ?

उत्तर–भक्तामर स्त्रोत संस्कृत भाषा में लिखा गया है।

प्रश्न 8 भक्तामर स्त्रोत कौन से छन्द में लिखा गया है ?

उत्तर भक्तामर स्त्रोत बसंत तिलका छंद में लिखा गया है।

प्रश्न 9 भक्तामर स्त्रोत का भक्तामर यह नाम क्यों पड़ा ?

उत्तर–भक्तामर स्त्रोत का प्रथम शब्द भक्तामर होने से इसका नाम भक्तामर स्त्रोत पड़ा।

प्रश्न 10 भक्तामर स्त्रोत में कुल कितने काव्य हैं ?

उत्तर भक्तामर स्त्रोत में कुल 48 अड़तालीस, काव्य हैं।

प्रश्न 11 भक्तामर स्त्रोत कौन सा काव्य है ?

उत्तर – भक्तामर स्त्रोत भक्ति काव्य है।

प्रश्न 12 भक्तामर स्त्रोत में किसकी भक्ति की गयी है?

....

....

कृति : **और उद्वार हो गया**

कृतिकार : मुनि प्रज्ञा सागर

प्रकाशक : जैन धर्म संवर्धन संस्थान, अहमदाबाद

प्राप्ति स्थल : जैन धर्म संवर्धन संस्थान द्वारा प्रोफेसर डॉ. शैलेष भाई ए. शाह 1/1 गोकुल अर्पाटमेंट, सोला हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी अहमदाबाद–380063

मूल्य : 15/– रूपये मात्र

पुष्य में जो महत्व सुवास का है, दीप में जो महत्व प्रकाश का है, मिश्री में जो महत्व मिठास का है और धर्म में जो महत्व सत्य का है, जीवन में वहीं महत्व सन्त का है। जिस प्रकार सुवास के बिना पुष्प, प्रकाश के बिना दीप, मिठास के बिना मिश्री और सत्य अहिंसा के बिना धर्म व्यर्थ है उसी प्रकार सन्त और सत्संग के बिना यह दुर्लभतम मानव जीवन भी व्यर्थ है। जिन्हें सत्संग के बिना जीवन व्यर्थ नजर आता है वे कहते हैं जो दिन साधु न मिले, तो दिन होय उपास। जो सन्तों की कीमत समझ लेते है उनके भीतर से ही यह वचन निकलता है। उन्हें ही सत्संग के बिना उपवास सा महसूस होता है।

सत्संग आत्मा का खुराक है और भोजन शरीर की। शरीर के लिये तो सभी व्यवस्था कर लेते है। मनुष्य तो मनुष्य, पशु–पक्ष भी। परन्तु आत्मा की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। पशु पक्षियों को तो नासमझ कहकर क्षमा किया जा सकता है क्योंकि वे ताजिन्दगी इस तत्व से अनविज्ञ रहते हैं और उनमें इसे जानने की क्षमता भी नहीं होती। परन्तु सम्पूर्ण जीव जाति में मनुष्य को ही यह अधिकार प्राप्त है। लेकिन दुनिया में सबसे समझदार कहा जाने वाला इंसान, जीवन के अंत तक अपने आपको नहीं समझ पाता। और न समझ पायेगा क्योंकि स्वयं को समझने के लिए सत्संग जरूरी है। जिस प्रकार शरीर को खुराक देने से शरीर स्वस्थ व तन्दुरस्त रहता है उसी प्रकार आत्मा को आत्मा की खुराक देने से आत्मा स्वस्थ व तंदुरस्त रहती है। लेकिन याद रहें, शरीर की व्यवस्था तो तुम्हारी मां–बहन, बेटी, पत्नी कोई भी कर सकती है, परन्तु आत्मा की व्यवस्था सिर्फ संतकृपा से ही हो सकती है।

क्योंकि वे जानते हैं कि आत्मा का भोजन क्या है? उसे क्या पसंद है? इसलिये तो जब उनके सत्संग में जाते हो तो वे तुम्हें ज्ञानामृत भोजन ज्ञान का अमृत परोसते है। जो उसे श्रद्धा से ग्रहण कर उसका स्वाद ले लेते है। वे बार–बार व्यसनी व्यक्ति की तरह विद्याव्यसनी बनकर उसका पान करने के लिये संत चरण में जाते है। छक्कर पीते है फिर भी कहते हैं, पिव पिव लागे प्यास। अभी तुम तृप्त हो। इसीलिये पानी की तलाश नहीं करते जिस दिन प्यास लगेगी उसी दिन पानी की तलाश कर दोगे। क्योंकि प्यासा आदमी ही पानी की तलाश करता है। यदि तुम्हें भी प्यास होगी हो तुम भी संत की तलाश कर लोगे, और सुराही रूपी संत के समक्ष प्याला।
बनकर समर्पित हो जाओगे। क्योंकि समर्पित होने से ही प्याला भरता है और प्याला भरे होने से ही प्यास बुझती है। तो आत्मा की भूख और प्यास मिटाने के लिये संत समागम और प्रभु भजन आवश्यक है।

याद रहें, सत्संग और प्रभु भजन जीवन में बड़ी दुर्लभता से मिलते हैं। इनकी प्राप्ति के लिये जन्मों–जन्मों का पुण्य चाहिये तब कहीं जाकर घड़ी आधी घड़ी का सत्संग मिलता है और वह भी पूरी तरह से घटित हो जाये यह और कठिन बात है। क्योंकि सत्संग मिलना एक और बात है और सत्संग घटित होना दूसरी बात है। सत्संग मिलने का मतलब है संतों का दीदार होना और सत्संग घटित होने का मतलब है– संतों से प्यार होना। दीदार में सिर्फ दर्शन होता है और प्यार में सम्पूर्ण समर्पण। समर्पण के साथ किया गया सत्संग ही जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाता है। यदि आपके जीवन में सत्संग से परिवर्तन नहीं आ पा रहा है तो सच मानिये इसमें संतों की नहीं, अपितु आपके समर्पण की कमी है। अतः सन्तों की साधना पर संदेह करने की बजाय अपने समर्पण को पूर्ण करें, ताकि सत्संग घटित हो सकें। याद रहें, समपर्ण मिट्टी के द्रोणाचार्य से भी एकलव्य को शिक्षा और सिद्धि प्राप्त करा देता है हजारों वर्ष बाद विष के प्याले में मीरा को श्रीकृष्ण का दर्शन करा देता है। काले नाग को सती सोमा के हाथ में पुष्पहार बना देता है। मेंढ़क को क्षणभर में देवत्व............................

....

कृति : <u>सुबह की किताब</u>

कृतिकार : मुनि प्रज्ञासागर जी

प्रकाशक : जैन धर्म संवर्धन, अहमदाबाद

प्राप्ति स्थल : जैन धर्म संवर्धन संस्थान द्वारा
प्रोफेसर डॉ. शैलेष भाई ए.
'शाह 1/1, गोकुल अपार्टमेन्ट, सोला हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, अहमदाबाद – 380063 फोन : 079–27438207

मूल्य : 10/– रूपये मात्र

1. सांसारिक जीवन जीते हुए गृहस्थों को सुखी जीवन के लिए प्रतिदिन कुछ न कुछ जरूर करना चाहिए ?
2. अब प्रश्न उठता है क्या करना चाहिए ?
3. इस प्रश्न के समाधान के लिए ही मैंने ''सुबह की किताब'' नामक छोटी सी कृति तैयार की है।
4. कृति छोटी जरूर है परन्तु महत्वपूर्ण विषयों से समाहित है।
5. यदि आप प्रतिदिन इतना कर सकें तो बहुत है।
6. और इतना करने का भी समय नहीं तो चिन्ता की कोई बात नहीं।
7. मैं आपकी चिन्ता को भी निर्मूल कर देता हूँ।
8. आप कहेंगे कैसे ? तो मेरी बातों पर ध्यान दें।
9. सुबह उठकर कम से कम प्रभाव को सुप्रभात बनाने तक की क्रिया अवश्य करें।
10. शारीरिक शुद्धि करते समय कम से कम स्नानाष्टक का एक श्लोक अवश्य पढ़े।
11. स्नान करने से पश्चात व्यायाम, प्राणायाम एवं ध्यान करें। यदि व्यायाम या प्राणायाम करने का समय न हो तो कम से कम ध्यान अवश्य करें।
12. मन्दिर जाते है तो मन्दिर सम्बन्धी क्रियाऐं करें।
13. यदि मन्दिर नहीं जाते है तो ''घर में ही गुणगान करें'' नामक शीर्षक से पाठ करें। यदि समय की कमी हो तो कम से कम महामंत्र, जैन रक्षा मंत्रद्व मेरी भावना पढ़कर एक माला फेरे।
14. यदि इतना भी कर सके तो सुप्रभातं दिने दिने का सूत्र सार्थक हो सकेगा। तो आओ सुबह की किताब के साथ जीवन ....

....

.

कृति : **समर्पण**

कृतिकार : मुनि प्रज्ञासागर जी

प्रकाशक : जैन धर्म संवर्धन, अहमदाबाद गुज.

प्राप्ति स्थल : जैन धर्म संवर्धन संस्थान द्वारा

प्रोफेसर डॉ. शैलेष भाई ए.

'शाह १/१, गोकुल अपार्टमेन्ट, सोला हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, अहमदाबाद - ३८००६३ फोन : ०७६-२७४३८२०७

मूल्य : समर्पण

समर्पण बनने का सूत्र है

समर्पण!

समर्पण करने का सूत्र है।

बीज समर्पित होता है, वृक्ष बन जाता है

माटी समर्पित होती है, गागर बन जाती है

बूंद समर्पित होती है, सागर बन जाती है,

पत्ता समर्पित होता है सावन बन जाता है,

पतित समर्पित होता है, पावन बन जाता है।

बनने के लिए समर्पण जरूरी है।

मैं जिस समर्पण की बात कर रहा हूँ

वह आत्म समर्पण नहीं, आत्मीय समर्पण है।

आत्म समर्पण चोर और डाकू करते हैं

मृत्यु से बचने और बचे हुए जीवन में कुछ करने के लिए।

आत्मीय समर्पण मोक्ष के इच्छुक मुमुक्षु श्रावक और साधु करते हैं।

मृत्युंजय बनने और इस जीवन द्वारा संसार सागर तरने के लिए।

आत्म समर्पण मजबूरी है,

तो आत्मीय समर्पण जरूरी है।

एक बार जो आत्मीय समर्पण कर देता है, वह तत्क्षण उसका फल पाता है।

गुरूवर के जीवन का प्रसंग है, वे कहते हैं-

जब मैं पहली बार आत्म कल्याणार्थ परम पूज्य गुरूवर १०८ श्री विद्यासागर जी के श्री चरणों में पहुंचा और उनसे सविनय निवेदन किया कि मुझे अपने जैसा बना लें।-गुरूदेव !

तब गुरूदेव बोले-पात्र हो ?

मैं इस सांकेतिक प्रश्न को समझ, अविलम्ब गुरू चरणों में सांष्टांग समर्पित हो गया।

मुझसे समीचीन समाधान पाक, गुरूदेव ने कहा-

चरणों से उठो और ....

गुरूदेव आगे कुछ बोलते उससे पहले मैं बोल पड़ा—चरणों से उठना ही होता तो
समर्पित क्यों होता? अब समर्पित हो गया हूँ तो समर्पित ही रहूँगा।
गुरूदेव बोले—वही तो मैं कह रहा हूँ कि चरणों से उठो और यह आचरण उठाओ।
क्योंकि तुम्हारा समर्पण तुम्हारे पात्र होने का परिचय है।
इसीलिए मेरे गुरुदेव कहते हैं—मेरे बनने की कहानी, मेरे समर्पण की कहानी है।
चाहे गुरू गौतम स्वामी से पूछो या आचार्य कुन्दकुन्द से,
श्री धरसेनाचार्य से पूछो या, आचार्य पुष्पदंत—भूतबली से,
आचार्य शांतिसागर से पूछो या श्री विद्यासागर से,
गुरूदेव पुष्पदंत सागर से पूछो या मुझ प्रज्ञासागर से,..

कृति : **अर्चना के गीत**

कृतिकार : संकलन

प्रकाशक : जैन प्रज्ञा प्रकाशन, भोपाल

प्राप्ति स्थल : जैन प्रज्ञा प्रकाशन, अ-१२४, कस्तूरबा नगर, भोपाल

मूल्य : २५/- रूपये मात्र

मंगलाष्टक

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्री सिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयांराधकाः,
प्च्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मंग्लम्।।१।।
श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योत-रत्नप्रभा,
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिनसिद्ध- सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्; पच्ंगुरवः कुर्वन्तु ते मंग्लम्।।२।।
स्म्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति श्री नगराधिनाथ-जिनपत्युक्तोक्पर्वप्रद।
धर्मः सूक्तिसुधा व चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मंग्लम!।।३।।
नाथेयादि-जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताः चतुर्विशातिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिशो द्वादशः।
ये विष्णुप्रतिविष्णु-लांग्लधराः सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्येप्रथितास्तिषष्ठिपुरूषाः कुर्वन्तु ते मंग्लम्।।४।।